B.A. History Hon's Part: I

Paper: II, Unit: IV, Date: 30.9.2020 Lecture No. 30

Lession: वणिकवाद के कारण

वणिकवाद की परिभाषा के परिप्रेक्ष्य में विद्वान मतैक्य नहीं है। सभी विद्वानों ने अपना-अपना मत परिभाषित करने की कोशिश की है। अलेक्जेंडर ने इसे परिभाषित की है, "प्रायः हम व्यापारीवादी सिद्धांत वाक्यांश का प्रयोग करते हैं किन्तु उसका अभिप्राय यह नहीं की किसी समय पर लेखकों का कोई समूह था जिसने व्यापारवादी विचार प्रस्तुत किये। प्रो० खेन के शब्दों में "वाणिकवाद से आशय उस आर्थिक विचारधारा से है जो 16वीं शताब्दी से लेकर 18वीं शताब्दी के मध्य तक यूरोपीय राजनीतिज्ञों में लोकप्रिय रही थी। उदाहरणस्वरूप ब्रिटेन में इसे संरक्षणवाद, फ्रांस में कोलबर्टवाद तथा जर्मनी में कैमरेवाद कहा जाता था। वाणिकवाद तीन तत्वों से उत्प्रेरित था-सोना, शक्ति तथा अभिमान।

वाणिकवाद के महत्वपूर्ण कारण निम्नलिखित हैं:-

1. पुनर्जागरण: मध्यकाल में धार्मिक अंधविश्वास अपने चरमोत्कर्ष पर था। यूरोप में इसका कड़ा विरोध किया गया जिसके फलस्वरूप वहाँ एक नई क्रांति की शुरुआत हुई जो पुनर्जागरण के नाम से विख्यात हुआ। मध्ययुग के पारलौकिक सुख के स्थान पर दुनियावी सुख को अधिक अहमियत दिया जाने लगा। इस युग ने अनेक प्रतिभाशाली व्यक्तियों तथा ल्यूनार्दो-दा-विंची, न्यूटन, गैलीलियो, कोपरनिकस इत्यादि का जन्म दिया। छापखाना, दूरबीन, दिशासूचक यंत्र जैसे महत्वपूर्ण यंत्रों का इजाद भी किये गये। परिणामस्वरूप आर्थिक क्षेत्र आहिस्ता-आहिस्ता विकसित होने लगा।

2. धर्म सुधार आन्दोलन: यूरोप में सामन्तवादी व्यवस्था अपनी चरम सीमा पर थी। उस समय राजा से अधिक शक्तिशाली चर्च का पोप था। वह भोग-विलास में डूबा हुआ था। वह पापमोचन पत्र बेचा करता था जिससे उसे अधिक पैसा की कमाई होती थी। उसका कथन था कि अगर पापों से निजात पाना है तो पापमोचन पत्र का क्रय करो। रोमन चर्च सूदखोरी को अधार्मिक एवं अनैतिक मानता था। इसलिए इनका विरोध हुआ एवं मार्टिन लूथर के नेतृत्व में धर्म सुधार आन्दोलन चल पड़ा। इससे वाणिकवाद का पदार्पण हुआ।

3. राजनीतिक कारण: रोमन साम्राज्य के पतन के बाद 5वीं शताब्दी से 15वीं शताब्दी तक मुकम्मल यूरोप में अंधकार युग था। राजा पोप के समक्ष बिलकुल झुका हुआ था और उनके धर्म आदेशों को अपने ऊपर शिरोधार्य किये हुआ था। इसलिए शक्तिशाली राज्यों के निर्माण पर जोर दिया जाने लगा। मैकियावेली की किताब 'The Prince' प्रकाशित हो चुकी थी जिसने शक्तिशाली राज्यों के संगठन को उत्साहित किया। घरेलू शासन दो खंडों में विभाजित था। ऐसी स्थिति में जनमत राजा को अधिकाधिक कार्य एवं अधिकार देने के पक्ष में सोच-विचार किये जाने लगे। इसके अलावे बाहरी आक्रमण का प्रतिरोध करने के लिए भी एक शक्तिशाली राज्य की जरूरत थी। इससे वाणिकवाद का जन्म हुआ।

4. आर्थिक कारण: मध्ययुग की आर्थिक परिस्थिति भी वाणिकवाद का एक अहम कारण था। उस समय पिछड़ी हुई कृषि, मौद्रिक अर्थ-व्यवस्था का जन्म, नये-नये स्थानों की खोज,

महत्वपूर्ण धातुओं की खोज, मूल्य वृद्धि और मजदूर वर्ग का जन्म का ही प्रभाव था। सामंती अर्थ-व्यवस्था की रीढ़ कृषि थी। उद्योग-धंधे नगण्य ही थे। 1540 से 1560 तक की अवधि में अमेरिका के कई स्थानों पर चाँदी एवं सोने के कई खानों का पता लग चुका था। उस युग में बैंकों का जन्म हुआ। बैंकों ने आन्तरिक एवं विदेशी व्यापार को बढ़ाने तथा पूँजी के निर्माण में अमूल्य सहयोग दिया। इस युग में वस्तुओं का मूल्य भी बढ़ गया।

हम स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि वणिकवाद के उपर्युक्त कारणों के आलोक में हम यह निःसंदेह कह सकते हैं कि 16वीं शताब्दी में यूरोप में सामाजिक आर्थिक परिस्थितियों ने एक आर्थिक-व्यवस्था को जन्म दिया जो वाणिकवाद के नाम से प्रचलित हुआ। अब व्यक्ति बिना किसी हिचक के धन-सम्पत्ति का अर्जन करने लगा और राज्य को भी सम्पत्ति की शक्ति का ज्ञान हो गया।

□ डॉ० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कालेज, जयनगर